विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति,
गृह पत्रिका

अंक - 26

अक्तूबर 2012 - दिसम्बर 2012

सम्पादकीय

पश्चिम क्षेत्र में पिछले एक वर्ष में विद्युत क्षमता में 8527 मे.वा. की उत्साहजनक वृद्धि हुई । यह उत्पादन थर्मल एककों से हुआ, जिनमें ईंधन के रूप में कोयले का प्रयोग किया जाता है । इस प्रकार के विद्युत उत्पादन के साथ कोयले की राख का निपटान और गैस निकासी की समस्या निर्माण होती है । विद्युत उत्पादन में वृद्धि करने की धुन में हम पर्यावरण और हमारे अपने स्वास्थ्य पर इसके पड़ने वाले प्रभाव को नजर अंदाज नहीं कर सकते । किसी भी प्रकार के विकास को मानवी पहलू होना चाहिए । विकास के साथ-साथ विश्राम की भी उतनी ही जरूरत है । विद्युत का उत्पादन और पर्यावरण का संरक्षण दोनों में संतुलन बनाये रखना बहुत ही आवश्यक है । यह सच है कि विद्युत के जरिए हम औद्योगिक, तकनीकी क्षेत्र में विकास जरूर कर पायेंगे, लेकिन उसके लिए हमें पर्यावरण और अपने स्वास्थ्य की कीमत नहीं चुकानी पड़नी चाहिए । अत: हमें इस तरह के तकनीक को भी विकसित करना चाहिए । जिसकी सहायता से विद्युत उत्पादन प्रक्रिया के दौरान निकलने वाली कोयले की राख, गैस आदि का निपटारा इस तरह से हो कि मानव एवं पर्यावरण को हानि न पहुँचे । साथ ही हर इंसान बिजली का उचित उपयोग करें, बचत करें, तो भी इस समस्या पर कुछ हद तक अंकुश लग सकता है । आखिर बिजली की बचत भी बिजली का उत्पादन ही है।

शुभकामनाओं सहित ।

सु.द. टाकसांडे

सु.द. टाकसांडे
सदस्य सचिव (प्र.)

हमें रक्षा सिर्फ उसकी नहीं करनी है
जो विरासत में मिला है,
बल्कि उसकी भी करनी है
जो हम अपने बच्चों के लिए छोड़कर जा रहे हैं ।

- शिव खेड़ा

******

हार्दिक बधाई

❖ श्रीमती ऋता राणे, उच्च श्रेणी लिपिक की दिनांक 8 अक्तूबर 2012 को पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, मुंबई में मुख्य लिपिक के पद पर पदोन्नति हुई । पक्षेविसमिति परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ।

राजभाषा समाचार

❖ राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 100 वीं बैठक दिनांक 25 अक्तूबर 2012 को श्री सु.द.टाकसांडे, सदस्य सचिव (प्र.) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । जिसमें राजभाषा नीति अनुपालन से संबंधित विभिन्न मदों पर वार्षिक कार्यक्रम के परिप्रेक्ष में समीक्षा की गई।

❖ दिनांक 31 दिसम्बर 2012 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'बिलों की प्रस्तुति एवं अनुवर्ती कार्रवाई' विषय पर श्री शेष कुमार सावंत, उच्च श्रेणी लिपिक ने व्याख्यान दिया । कुल 3 अधिकारी एवं 8 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला का लाभ लिया ।

❖ भारतीय राजभाषा परिषद् द्वारा उज्जैन (म.प्र.) में दिनांक 31 अक्तूबर 2012 से 2 नवम्बर 2012 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अधिकारी एवं श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक-II ने भाग लिया ।

❖ राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी रूपाम्बरा द्वारा दिनांक 2 से 4 अक्तूबर 2012 तक जगन्नाथ पुरी (ओड़िशा) में आयोजित 25वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में श्री दया नन्द सिंह, कार्यपालक अभियंता ने भाग लिया ।

तकनीकी समाचार

❖ पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति की 21 वीं बोर्ड मिटिंग दिनांक 9 नवम्बर 2012 को रायपुर में सम्पन्न हुई । इस बैठक का आयोजन छत्तीसगढ़ पावर ट्रांसमिशन कम्पनी द्वारा किया गया था ।

******

जल प्रबंधन की जागरूकता : समय की मांग

श्रीमती आरती देशमुख
अवर श्रेणी लिपिक

जल ही जीवन है । इंसान थोड़े दिन भूखा रह सकता है, लेकिन पानी के बिना जीवित नहीं रह सकता । हमारी पुरानी संस्कृतियाँ नदी के किनारे बसी हुई मिलती हैं । हम किसी चीज का प्रण करते हैं तो पानी डालकर ही करते हैं । जगह को पवित्र करने के लिए पानी का उपयोग किया जाता है । पुराने जमाने में विशेष, आदरातिथ्य दिखाने के लिए अतिथि के पैर धोकर उन्हें घर में प्रवेश दिया जाता था । कालीदास ने मेघदूत भी पानी देने वाले जलद पर लिखा है । इस तरह से पानी हमारे जीवन का अभिन्न अंग है ।

लेकिन आज जहाँ देखो पानी का संचय कम होता दिखाई दे रहा है । गंगा, यमुना जैसी नदियों का पानी प्रदूषित हो रहा है । पहले इन नदियों में नहाकर लोग खुद को पवित्र करते थे, लेकिन आजकल इन नदियों में कूड़ा-कचरा, मरे हुए जानवर, मृत शरीर, केमीकल्स आदि बहा दिये जाते हैं और पीने लायक पानी कम हो रहा है । ऐसे में बारिश का पानी इकट्ठा करके तालाबों में संग्रहित करना ही, पानी बचाने का अच्छा उपाय है ।

वास्तव में आजकल हर दो साल के बाद सूखा हमारे देश की ज्वलंत समस्या है । इसे हमने ही निर्माण किया है । पेड़ों को काटने से जमीन में धंसी हुई पेड़ की जड़ें जो पानी जुटाकर रखती हैं, वो नष्ट हो जाती हैं । जिस प्रदेश में घने जंगल होते हैं, वहाँ बादल जमा होकर बारिश लाने में मदद करते हैं । इसलिए लोगों में पेड़ों के प्रति जागरूकता आनी चाहिए । पहाड़ों पर पेड़ उगाने के लिए, उनका संवर्धन करने के लिए बच्चों को प्रेरित करना चाहिए ।

लोगों को पानी बचाने के लिए अलग-अलग उपाय करने चाहिए । जैसे सुबह ब्रश करते वक्त नल पूरे वक्त चालू रखने की जरूरत नहीं होती । माता-पिता यही आदत अगर अपने बच्चों में भी डालेंगे तो हम पानी की बचत कर सकेंगे । घर की साफ-सफाई, बाथरूम, टॉयलेट आदि की सफाई के लिए हम पीने का पानी का उपयोग न कर अगर कपड़े धोते वक्त जो पानी कपड़ों को निचोड़ने के बाद बचता है, उसका उपयोग करें तो पानी की बचत होगी । कार वगैरह धोने के लिए इस बचे हुए पानी का उपयोग कर सकते हैं । कपड़े धोने के लिए फुली ऑटोमेटिक वाशिंग मशीन का उपयोग करते हैं तो पानी की बचत कर पाएंगे ।

आज गाँवों में बरसात की मात्रा इस साल ना के बराबर होने के कारण खेतों में किसानों ने बुआई तक नहीं की है । पीने का पानी गाँवों में चार दिन के बाद थोड़ी देर के लिए ही आता है और यहाँ शहरों में हम जितना चाहे उतना पानी का प्रयोग करते हैं । बीच में हर घर में पानी का मीटर बिठाने की बात हो रही थी, वो भी शहरों में पानी बचाने के लिए कारगर हो सकती है । क्योंकि लोगों को पानी के लिए वैसे देने पड़ेंगे ।

आजकल हर नई बिल्डिंगों में रेन वॉटर हार्वेस्टिंग का नियम लागू कर देना चाहिए । उससे इमारत के टेरेस पर गिरने वाला बरसात का पानी बिल्डिंग के नीचे बनाये हुए टैंक में जमा करके उसका उपयोग कपड़े धोने, घर की बाकी साफ-सफाई के कामों के लिए करने के लिए मकानधारकों को अलग नल द्वारा दिया जा सकता है । वैसे ही स्कूल, अस्पताल आदि में पानी का पुन: प्रयोग करें तो हम बहुत-सा पानी बचा सकेंगे । यहाँ सरकार के साथ लोगों का सहभागी होना महत्वपूर्ण बाते है । घरों में या सार्वजनिक स्थलों पर जहाँ भी नल खराब हुए हैं उनकी मरम्मत करनी चाहिए या उन्हें जल्द ही बदल देना चाहिए । बच्चों में भी पानी कैसे बचाकर रख सकेंगे इसकी शिक्षा जरूर देनी चाहिए ।

पानी ही जीवन है और पानी के बिना जीवन चल नहीं पायेगा इसलिए जल प्रबंधन की जागरूकता हर एक में लाना ही समय की मांग है ।

(हिन्दी पखवाड़ा 2012 निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध)

******

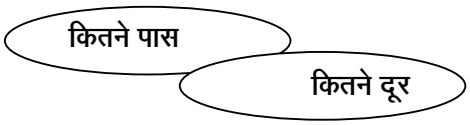

एक बार एक साधु अपने शिष्यों के साथ नदी के तट पर स्नान करने के लिए गये । वहाँ देखा तो दो लोग गुस्से में एक-दूसरे से लड़ रहे थे । दोनों ही जोर-जोर से चिल्ला रहे थे । उनके चारों ओर भीड़ जमा हो गई थी । हालांकि वे दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल पास खड़े थे लेकिन फिर भी जोर-जोर से चिल्लाकर ही बात कर रहे थे । यह देखकर साधु ने शिष्यों से पूछा कि गुस्से में इंसान चिल्लाकर क्यों बोलता है ?

एक शिष्य ने कहा वे गुस्से पर काबू नहीं पा रहे हैं, इसलिए चिल्ला रहे हैं । दूसरे शिष्य ने कहा कि वे दोनों ही यह सोच रहे होंगे कि जो अधिक जोर से चिल्लायेगा उसकी बात सच मानी जायेगी । किसी ने कहा कि उन्हें लगता होगा कि जोर से बोलने वाले का ही अधिक प्रभाव पड़ता है।

शिष्यों ने अलग-अलग जवाब दिये, जिससे साधु संतुष्ट नहीं हुए । सभी शिष्य असमंजस में पड़ गये, उन्हें कोई और जवाब नहीं सूझ रहा था । फिर साधु ने उन्हें समझाया । जब हमें किसी पर गुस्सा आता है तब भले ही हम एक-दूसरे के पास खड़े हों लेकिन हमारे दिलों के बीच दूरी हो जाती है ।हमारे दिल एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं । हमें लगता है कि हमारी बात अब उस तक धीमे स्वरों में पहुँच नहीं पायेगी और इसलिए हम चिल्लाते हैं ।

संकलक- श्रीमती तरूप्रभा शैल
हिन्दी अधिकारी

******